कथा
सम्पादक : मार्कण्डेय

मध्यप्रदेश में
सार्थक सिनेमा के पक्ष में

बहुआयामी पहल

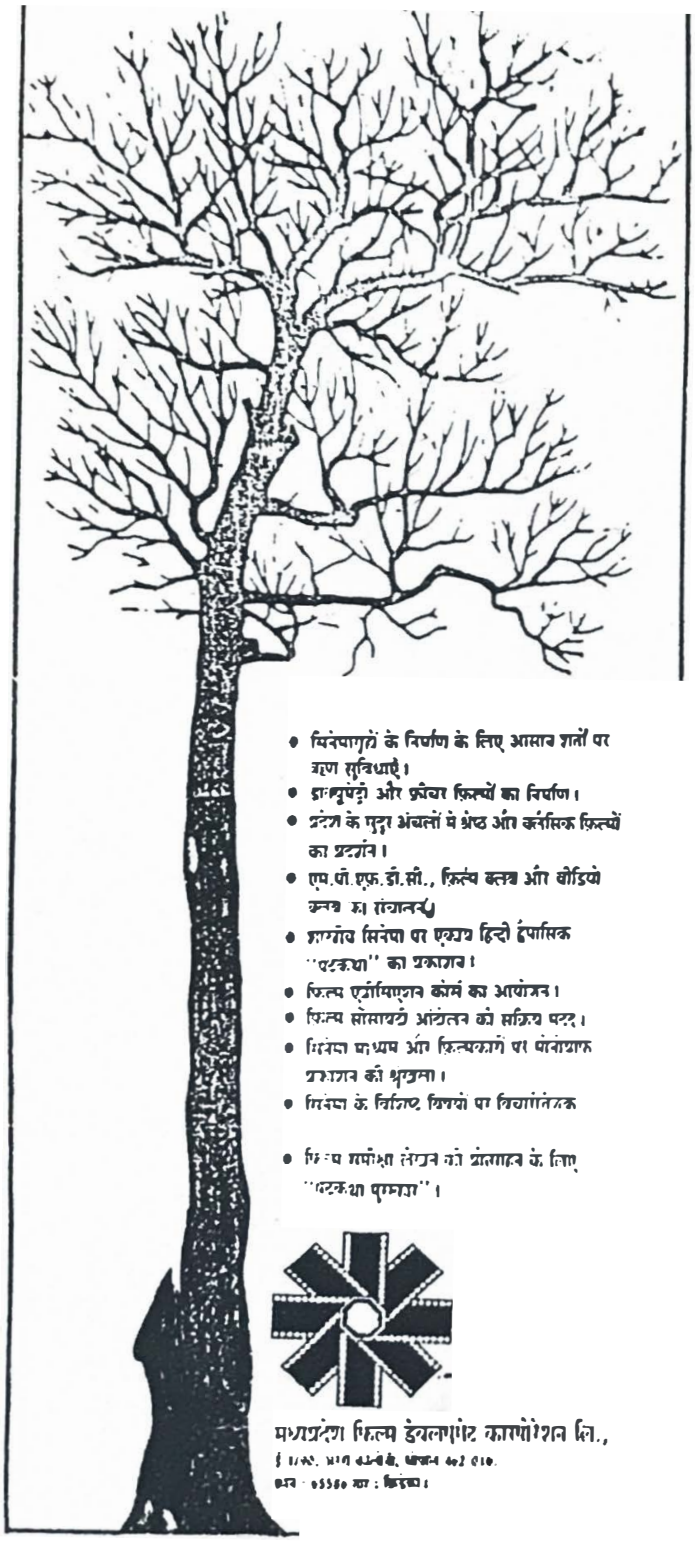

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

TRIVENI STRUCTURALS LIMITED
(A subsidiary of Bharat Yantra Nigam Ltd.)

Naini, Allahabad-211010, India
Grams : TRIVOEST Telex : 0540-221
Phone : 7491-95

DESIGNERS, ERECTORS & FABRICATORS OF :

* Heavy Structures & Bridges
  Hydraulic Structures
* Pressure Vessels & Tanks
* Towers
* Pipes & Penstocks
* Nuclear Vessels
* Ropeways & Cranes
* Water Treatment Plants
* Grain Silos
* Head Gear & Mining equipment
* Turnkey Coal Project.

TSL also offers consultancy services fo Turnkey Project.

SALES OFFICES

Delhi

Tele. 343068
Telex 031-62952
Gram TRIVOEST

Bombay

Tele. 242228
Telex 011-6708
Gram TRIVOEST

Calcutta

Tele. 297111
Telex 021-3386
Gram TRIVOEST

साहित्य अकादमी
द्वारा
प्रकाशित कुछ नयी पुस्तकें

आजादी	लेखक	चमन लाल	1988	रु० 60
हिन्दी कहानी-संग्रह	संपादक	भीष्म साहनी	1988	रु० 50
कन्नड़ लोक कथाएँ	संपादक	सिंपी लिंग्गण एवं जी० एस० परमा शिवय्या	1988	रु० 50
रामचन्द्र शुक्ल संचयन	संपादक	नामवर सिंह	1988	रु० 40
ग्यारह तुर्की कहानियाँ	अनुवादक	मस्तराम कपूर	1988	रु० 20
अबुल कलाम आज़ाद	लेखक	अब्दुल कवी दस्नवी	1988	रु० 15
गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'	लेखक	नरेशचन्द्र चतुर्वेदी	1988	रु० 5
परमानन्द अलमस्त	लेखक	ओम गोस्वामी	1988	रु० 5

डाक-व्यय नि:शुल्क

शुल्क मनीआर्डर/बैंक-ड्राफ्ट द्वारा सचिव, साहित्य अकादमी के नाम भेजें

अधिक जानकारी और नि:शुल्क सूचीपत्र के लिए लिखें

बिक्री प्रबन्धक
साहित्य अकादमी
'स्वाति' मन्दिर मार्ग
नई दिल्ली-110001
दूरभाष : 353297

रवीन्द्र भवन
35-फिरोज़शाह मार्ग
नई दिल्ली-110001

29-एन्डाम्स रोड
तेनाम पेठ
मद्रास-600018

172-मुम्बई मराठी ग्रन्थ
संग्रहालय मार्ग, दादर
बम्बई-400014

ब्लाक V-बी
रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम
कलकत्ता-700029

साक्षात्कार

अप्रैल-जून ८९

११३-११५ [संयुक्तांक]

- ☐ विजयदान देथा, लक्ष्मीधर मालवीय, श्रवणकुमार, देवेन्द्र और अखिलेश की कहानियाँ।
- ☐ रमेशचन्द्र शाह और पंकज विष्ट के उपन्यास अंश।
- ☐ केदारनाथ अग्रवाल, विष्णुचंद्र शर्मा, मानबहादुर सिंह, अजित चौधरी, राजा खुगशाल, ओम भारती, बद्रीनारायण, दिनेश कुशवाह, रमाकांत नीलकंठ और महेश बाजपेयी की कविताएँ।
- ☐ फारसी कवयित्री सीमीन वहबहानी से नासिरा शर्मा की बातचीत।
- ☐ विदेशी साहित्य में दक्षिणी कोरियाई कहानी और सोवियत कहानी, फारसी, ग्रीक और जर्मन कविताएँ : अनुवाद-नरेन्द्र जैन, राजीव, सत्येन कुमार और सुधीर सक्सेना।
- ☐ श्रीलाल शुक्ल, चन्द्रकांत देवताले और ओमप्रकाश मेहरा की किताबों पर क्रमशः मधुरेश, रंजना अरगड़े और रामविलास शर्मा की समीक्षाएँ।
- ☐ पाठकमंच में भवानीप्रसाद मिश्र की किताब नीली रेखा तक पर विस्तृत रपट।
- ☐ शेष अन्य स्थाई स्तंभ।

सम्पक
मध्य प्रदेश साहित्य परिषद
डी ११ प्रोफेसर कालोनी, भोपाल-२
फोन : ५४०१२०

हरियाणा साहित्य अकादमी
साहित्य समालोचना के महत्वपूर्ण प्रकाशन

1.	समकालीन हिन्दी कहानी	डा० पुष्पापाल सिंह	40.00
2.	समकालीन कविता का यथार्थ	डा० परमानन्द श्रीवास्तव	45.00
3.	शैलीविज्ञान : प्रकार एवं प्रतिमान	डा० पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु	40.00
4.	हिन्दी साहित्य का आदिकाल	डा० हरिश्चन्द्र वर्मा	35.00
5.	प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यास भाग—एक	डा० यश गुलाटी	40.00
6.	प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यास भाग—दो	डा० चमनलाल	35.00
7.	हिन्दी विधाएँ : स्वरूपात्मक अध्ययन	डा० बैजनाथ सिंघल	40.00
8.	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशात्र का तुलनात्मक अध्ययन	डा० बच्चन सिंह	45.00
9.	पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त	डा० मैथिलीप्रसाद भारद्वाज	60.00
10.	मध्यकालीन हिन्दी काव्य-धाराएँ एवं प्रतिनिधि कवि, भाग—1	डा० बलराज शर्मा	55 00
11.	वैदिक साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, भाग—2	डा० सुधीकान्त भारद्वाज	30.00
12.	भाषिकी एवं संस्कृत भाषा	डा० डी० डी० शर्मा	40.00
13.	साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका	डा० मैनेजर पाण्डेय	(प्रेस में)
14.	हिन्दी की प्रगतिशील कविता	डा० लल्लन राय	(प्रेस में)
15.	समकालीन हिन्दी नाटक	डा० (श्रीमती) गिरीश रस्तोगी	(प्रेस में)

सम्पर्क

निदेशक,

हरियाणा साहित्य अकादमी

१५६३१८-डी, चण्डीगढ़

फोन : 27739

महान् चिन्तकों की जीवन-गाथाएँ

विवेकानन्द : रोमां रोलां
'अज्ञेय' एवं रघुवीर सहाय द्वारा अनूदित ४५.००

रामकृष्ण परमहंस : रोमां रोलां
डॉ० रघुराज गुप्त तथा धनराज विद्यालंकार द्वारा अनूदित ६०.००

महात्मा गांधी : रोमां रोलां : 'साहित्य अकादेमी' की ओर से प्रकाशित
प्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त' द्वारा अनूदित ४०.००

चैतन्य महाप्रभु
अमृतलाल नागर २५.००

आदि शंकराचार्य (जीवन और दर्शन)
डॉ० जयराम मिश्र ८५ ००

उत्तर योगी (श्री अरविन्द : जीवन और दर्शन)
शिवप्रसाद सिंह ७५.००

भगवान् बुद्ध (जीवन और दर्शन)
धर्मानन्द कोसम्बी ६५ ००

गुरु नानक देव (जीवन और दर्शन)
डॉ० जयराम मिश्र ४०.००

मानव पुत्र ईसा (जीवन और दर्शन)
डॉ० रघवंश ५०.००

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम
डॉ० जयराम मिश्र ५५.००

रामभक्त शक्तिपुंज हनुमान्
डॉ० जयराम मिश्र ५०.००

लीला पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण
डॉ० जयराम मिश्र ६०.००

महर्षि दयानन्द (जीवन और दर्शन)
यदुवंश सहाय (यंत्रस्थ)

स्वामी रामतीर्थ (जीवन और दर्शन)
डॉ० जयराम मिश्र ६०.००

सत्य साइ बाबा
डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त ६५.००

पैगम्बर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) : (जीवन और मिशन)
डॉ० इकबाल अहमद ४०.००

लोकभारती प्रकाशन
महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद

मूल्यांकन

अकाल में सारस : केदारनाथ सिंह

राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।

कठिन दिनों में कविताई

दूधनाथ सिंह

एक कवि के लिए अवकाश के क्षण बहुत मानी रखते हैं। वह उसके गहरे विचार-मंथन के दिन होते हैं। अपनी वास्तविक सांस्कारिक और वैचारिक जगह तलाशने के दिन होते हैं। कुहासों की झिलमिल दुनिया से बाहर आने के दिन होते हैं। खासकर तब, जब वह उत्सवधर्मी उछाहों का कवि हो। जैसे कि केदारनाथ सिंह···। अपनी शुरुआती दौर की कविताओं के बाद वे लगभग बीस वर्षों तक कविता की उधेड़बुन में लगे रहे। 'तीसरा सप्तक' और 'अभी बिल्कुल अभी' (1959-60) के प्रकाशन के बीस वर्षों बाद उनका दूसरा संग्रह 'जमीन पक रही है' प्रकाशित हुआ। केदारनाथ सिंह को समझने के लिए इस अन्तराल को समझना जरूरी है। स्वाभाविक जिज्ञासा होती है कि 'तीसरा सप्तक' की मूर्त, सहज, गीतात्मक-रोमैन्टिक जमीन से अपने को मुक्त करने के बाद केदार नाथ सिंह कहाँ खड़े दिखायी देते हैं? 'जमीन पक रही है' में वे काफी कुछ अमूर्त हुए हैं। यद्यपि मूर्त वस्तुओं और घटनाओं की सूची बहुत लम्बी है लेकिन इस विवरण के बीच में, इस ठोस दिखने वाली जमीन के चारों ओर घनी अमूर्तता का कोहरा है, जो कभी-कभी आतंक पैदा करता है और कभी-कभी अमरीकी कवि 'वालेस स्टीवेन्स' की याद दिलाता है। प्रकृति को उसके ठोस और मूर्त रूप में चित्रित करने का जितना ही घना प्रयत्न है, प्रकृति भी अपने 'नामों' और 'संज्ञाओं' के बाहुल्य के बावजूद एक घनी अमूर्तता में बिखरी हुई है। प्रारम्भिक दिनों का गहरा उच्छ्वास निपट उदासी में बदला हुआ दिखाई देता है। एक विचित्र, बेरस आत्म-युद्ध की पीड़ा से साक्षात्कार होता है···फिर यहीं से एक नया काव्य-व्यक्तित्व तलाशता हुआ कवि एक नये तेवर के साथ उगता हुआ दिखायी देता है। यानी वे लोग जो कवि को 'तीसरा सप्तक' और 'अभी बिल्कुल अभी' की कविताओं से जानते थे, उन्हें कविता के इस नये ढब को देखकर आश्चर्य हुआ। वह गीति-लय सहसा गायब हो गयी और जैसे अपनी ही उपलब्धियों से ऊबा हुआ कवि एक नये मुहावरे, एक अछूते व्यक्तित्व की खोज में गद्य की जमीन पर उतरता हुआ दिखायी दिया।

गद्य की इसी जमीन पर कविता अमोले की तरह उगती नजर आती है। 'यहाँ से देखो' संग्रह इसका प्रमाण है। यानी वह कविता जो अपने समय का सीधा-सादा, स्पष्ट और खरा-खरा जायजा लेती है। यहाँ आकर 'तीसरा सप्तक' का वह वक्तव्य सहज सच लगता है—"मैं मन को बराबर खुला रखने की कोशिश करता हूँ, ताकि वह आसपास के जीवन की हल्की-से-हल्की आवाज को भी प्रतिध्वनित कर सके।' एक लम्बे मौन के बाद काव्य-संवेदना धीरे-धीरे गति पकड़ती है और आसपास के जीवन की हल्की से हल्की आवाज को कवि सचमुच ही बड़ी गरिमा और गहराई से प्रतिध्वनित करता हुआ दिखाई पड़ता है।

'अकाल में सारस' इन्हीं हल्की-हल्की आवाजों का एक समग्र क्रम है। स्फुट प्रतिध्वनियाँ हैं जो एक समग्र और सार्थक काव्य-बिम्ब का निर्माण करती हैं। और एक समृद्ध विचार परम्परा का संकेत देती हैं। कविताओं के कई-कई उपक्रम हैं, विचार-मंथन के कई-कई 'शेड्स' हैं जिन्हें छानकर कवि एक निश्चित और 'क्रिस्टलाइज्ड' विचार-संपदा को निर्मित करता हुआ दिखायी पड़ता है। प्रत्येक कविता या प्रत्येक दो या तीन कविताएँ एक विशिष्ट और अलग अनुभव हैं, एक मुकम्मल तस्वीर है,

एक चित्र हैं। साथ ही हर कविता में एक नफीस द्व्यर्थकता है, जिसको पकड़े बिना हर कविता एक विवरण लगेगी—एक सपाटबयानी। अतः केदार की कविता की किसी भी सार्थक व्याख्या के लिए पंक्तियों के भीतर जो एक 'अननुभूत लय' (तीसरा सप्तक का वक्तव्य) है, उसको खोजना आवश्यक है।

कविता के लिए ये बड़े कठिन दिन हैं। कविताएँ हमारे आस-पास हैं लेकिन कविता का पारम्परिक घटाटोप अक्सर कवियों को, वे जो 'आहटें आस-पास' हैं उनसे दूर-दराज भटका देता है। इससे कविता का तेवर और ताजगी दोनों मारे जाते हैं। कठिन दिन इसलिए भी हैं कि कवि लोगों का दिमाग साफ नहीं है। हमारे जो कवि बड़े शहरों में रहते हैं उस शहर की शर्तें उन्हें मारती हैं। समयाभाव के कारण वे कविता में केवल चमत्कारी रह जाते हैं। जिससे खाने-कमाने का उनका बाजार-भाव बना रहे। वैचारिक भटकाव बड़ा प्रबल है। इस भटकाव में कविता, फिलहाल, या तो एक विस्थापित आस्था के सिद्धान्त-कथन में बदल जा रही है या छोटी-छोटी घर-गिरस्ती की भूल-भुलैयों में। सहजता भी एक निरर्थ कथन है। हमारे आज के सामाजिक और राजनीतिक जीवन में परस्पर विरोधी विचारों का जो साझा दिखायी देता है वह कवियों को दिग्भ्रमित करता है। अपनी कविताओं में वे भी विरोधी विचारात्मक साझेदारी निभाने लगते हैं। बन्दूक और चिड़िया कविता की चरमराती डाल पर एक साथ बैठे हुए दिखाई देते हैं··· । कविता में यह 'डाइलेक्टिक्स' का प्रयोग नहीं है। कविता में यह घाट-बेघाट थोड़ा गड़बड़ है। यह 'कोलाज' साम्राज्यवादी दुनिया के चित्रकारों की याद दिलाता है।

केदारनाथ सिंह बार-बार इन कठिन दिनों का जिक्र करते हैं। उनका इतना लम्बा मौन (वैसे कवि जब नहीं लिखता, हो सकता है तब भी वह रच रहा हो) और कविता के लिए सर्वथा एक नयी भूमि की तलाश इसका प्रमाण है। एक ऐसी नयी भूमि जिसमें विरोधी विचारों का साझा न हो, जिसमें काव्य-परम्परा का घटाटोप बहकाये नहीं। इसी भाषिक और वैचारिक ताजगी की तलाश में 'अकाल में सारस' की कविताएँ सामने आती हैं। जब एक सार्वजनिक और बनी-बनायी, कविता की भाषा बोलते हुए ···यानी वास्तव में जब 'चुप रहते-रहते कवि की जीभ अकड़ जाती है और आत्मा दुखने लगती है' तो वह अपनी मातृभाषा की ओर लौटता है। यह कविता की बनी बनायी भाषा से अपनी निजी, आविष्कृत, सहज संवेदनीय शब्द-सम्पदा की ओर लौटना है···एक लम्बी चुप्पी और एक गहरे विचार-मंथन के बाद। लेकिन 'अकाल में सारस' में सिर्फ इतना ही नहीं है। केदारनाथ सिंह जानते हैं कि इन कठिन दिनों में कविताई इतने से ही सम्भव नहीं है। ताजगी और अछूती मौलिकता की तलाश में यह कवि अपनी कविता का भूगोल और 'मिथक' भी नये सिरे से ढालता है। लोक कथाओं का ढब कविताओं के शिल्प में लगातार इस्तेमाल किया गया दिखता है।

घोड़े को चाहिए जई
फूलसुंघनी को फूल
टिटिहरी को चमकता हुआ पानी
बिच्छू को विष
और मुझे ?
 ओ मेरी घूमती हुई
उदास पृथ्वी !
मुझे सिर्फ तुम···
तुम···तुम···

यह एक नये ढंग का अलंकरण है। एक नयी अर्थ-सज्जा है। सहज-स्वाभाविक चाह की आन्तरिक गरिमा और ललक की सहजतम अभिव्यक्ति है। लेकिन बिना एक नये 'लोकेल' के यह सम्भव नहीं था। 'अकाल में सारस' का यह 'लोकेल' बिलकुल अछूता है। कभी किसान बाप द्वारा अपने बेटे को दिये गये सूत्रों में प्रकट होता है, कभी वर्णमाला को बनाने वाले उस अँगूठे में, जो अचानक सोख्ते में गायब हो जाता है, कभी होंठों की 'डाइलेक्टिक्स' में, कभी गाय और किसान में, कभी सड़क पर बाघ की खोज में आगे-पीछे चलते हुए कवि त्रिलोचन और कवि केदारनाथ सिंह···के स्वयं एक 'मिथक' में बदल जाने में। फिर सारी कविताएँ लोक कथाओं की सहजता में उतर जाती हैं और हमसे पंक्तियों के भीतर प्रवेश करने की अपनी इच्छा का इजहार करती हैं। यानी हर कविता कहती है कि मैं जैसी दिखती हूँ, उसके भीतर कुछ और भी हूँ। और तब सहज वर्णन एक गहरे अर्थ से उद्भासित हो उठते हैं। जैसे कविता है 'एक छोटा-सा अनुरोध'। कविता ऊपर से जितनी सपाट है, अन्दर से उतनी ही अर्थगर्भित। अस्तित्व के लिए जरूरी चीजों के बीच बिचौलिए न हों तो कैसा रहे। शायद गहरे और वास्तविक सौन्दर्य का साक्षात्कार हो। शायद वस्तुओं और प्रकृति के भीतर निहित गरिमा का पता चले। पूरे